Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, DEC-JAN, 2022, VOL-10/49

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण

सुरेश चन्द्र[1] & प्रो0 यश पाल सिंह[2]

[1]पी–एच. डी., शोधार्थी, बी.एड/एम.एड. विभाग, महात्मा ज्योतिबाफुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली–243006, भारत।

[2]आचार्य, बी.एड/एम.एड. विभाग, महात्मा ज्योतिबाफुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली–243006, भारत।

Paper Received On: 25 JAN 2022
Peer Reviewed On: 31 JAN 2022
Published On: 1 FEB 2022

Abstract

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण का लिंग व उनकी आवासीय पृष्ठभूमि के आधार पर अध्ययन करना था। पस्तुत शोध कार्य वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। न्यादर्श के रूप में से शोधार्थी द्वारा बरेली मण्डल के चार जनपद (बदायूं, बरेली, शाहजहांपुर व पीलीभीत) में से दो जनपद बरेली व पीलीभीत के पाँच विकास खण्ड व दो नगर क्षेत्र के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के 200 अभिभावकों का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन की लॉटरी प्रविधि के द्वारा किया गया। आकड़ों के संग्रहण हेतु शोधार्थी द्वारा स्व–निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया। यह मापनी पाँच बिन्दु लिकर्ट मापनी (पूर्णतः सहमत, सहमत, कह नहीं सकते, असहमत व पूर्णतः असहमत) पर आधारित है। शोधार्थी द्वारा संग्रहीत आकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण हेतु टी–परीक्षण सांख्यिकी को उपयोग में लाया गया। प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुए कि सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है साथ ही शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृष्टिकोण में भी सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति यही परिणाम प्राप्त हुआ।

मुख्य शब्दावली: *सर्व शिक्षा अभियान, प्रभावशीलता, अभिभावक व दृष्टिकोण।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

भारत दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों में एक है। प्रत्येक राष्ट्र के विकास के लिए शिक्षा का गुणवत्तापूर्ण होना अत्यन्त आवश्यक है। मनुष्य शिक्षा के अभाव में पशु के समान व्यवहार करता है। शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के निरन्तर विकास की एक प्रक्रिया है जो प्राकृतिक, सामंजस्यपूर्ण एवं प्रगितशील होती है (लाल, 2007)। 21वीं शताब्दी में एक राष्ट्र जो अपने भविष्य का निर्माण करने जा रहा है वह नवाचार की प्रक्रिया के माध्यम से अपने ज्ञान को धन एवं सामाजिक भलाई में परिवर्तित करने की क्षमता रखता है। प्रत्येक राष्ट्र का भविष्य उसकी आने वाली पीढ़ी के हाथ में होता है। इसीलिए कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर पर दी जाने वाली शिक्षा का गुणात्मक होना बहुत

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

आवश्यक है। इस बात को ध्यान में रखते हुए स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा के विकास हेतु अनेक कार्यक्रम संचालित किये गये जिनमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति, ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड, संशोधित कार्य योजना, डी.पी.ई.पी., मिड–डे–मील योजना आदि में वह सफलता नहीं प्राप्त हुई जिसकी सरकार को अपेक्षा थी (गुप्ता,1998)। वर्ष–2000–01 में भारत सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण योजना सर्व शिक्षा अभियान का शुभारम्भ किया गया जिसका उद्देश्य दस वर्ष अन्दर उस प्रत्येक बालक जिसकी आयु 6–14 वर्ष हो को निःशुल्क एवं अनिवार्य, सन्तोष जनक, गुणों से युक्त शिक्षा उपलब्ध कराना था।

पृष्ठभूमि

बालक के शारीरिक, मानसिक व नैतिक विकास के लिए शिक्षा बहुत ही आवश्यक है (वर्मा एवं कुमारी, 2008)। शिक्षा की सार्थकता एवं महत्व को देखत हुए शोधकर्ता द्वारा पूर्व किय गये शोध अध्ययनों का अवलोकन अग्र प्रकार किया। राव (2009) ने सर्व शिक्षा अभियान में सामुदायिक प्रतिभागिता का अभावः एक व्यक्ति अध्ययन का विश्लेषण किया और पाया कि विद्यालय गतिविधियों मे समुदाय की प्रतिभागिता के अभाव के साथ अभिभावकों में सर्व शिक्षा अभियान के प्रति जागरूकता का स्तर भी निम्न पाया गया। जैन एवं मित्तल (2011)ने सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के सन्दर्भ में शिक्षकों, छात्रों व अभिभावकों की जागरूकता एवं कार्य संन्तुष्टि के स्तर का परीक्षण किया। इन्होंने परिणाम के रूप में पाया कि 6–14 आयु वर्ग के बालकों में विद्यालय छोड़ने की प्रवृत्ति का अभाव है जबकि प्राथमिक शिक्षा हेतु छात्रों के नामांकन में वृद्धि दर्ज की गयी साथ ही यह सुझाव दिया कि शिक्षकों के साथ–साथ अभिभावकों में भी योजना के प्रति जागरूता के स्तर को और बढ़ाया जाये तो परिणाम और अच्छे प्राप्त हो सकते हैं। कुमारी एवं गिल (2016) ने सर्व शिक्षा अभियान में सामुदायिक भागीदारी की प्रभावशीलता का अध्ययन किया और यह निष्कर्ष पाया कि सर्व शिक्षा अभियान के सफल संचालन हेतु विद्यालय एवं समुदाय के मध्य परस्पर सहभागिता का अभाव है। मण्डल, दास, पांडा एवं पाल (2018) ने पश्चिम बंगाल (भारत) के कृषि व्यावसायिक सामुदायों के मध्य अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया तथा इससे यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि कृषि व्यवसाय पर आधारित समुदायों का दृष्टिकोण सर्व शिक्षा अभियान के प्रति निम्न से मध्यम स्तर का रहा है जबकि .गैर–कृषि व्यवसायों पर आधारित समुदायों का दृष्टिकोण सर्व शिक्षा अभियान के प्रति उच्च श्रेणी का रहा है। रेड्डी एवं रॉव (2019) ने सर्व शिक्षा अभियान के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण किया और पाया कि पुरूष एवं महिला अभिभावकों का दृष्टिकोण समान है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य अग्र प्रकार है–

1. सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं अग्र प्रकार है–

1. सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है जिसकी सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। सर्वेक्षण विधि का सम्बन्ध वर्तमान परिस्थितियों, प्रचलित विश्वासों दृष्टिकोणों या स्थापित अभिवृतियों एवं अभिमतों से होता है, जिसमें किसी क्षेत्र, समुह या संस्था की वर्तमान स्थिति को जानने, विश्लेषित करने, तथा प्रतिवेदित करने का प्रयास किया जाता है (गुप्ता, 2017)।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश राज्य के बरेली मण्डल (बदायूं, बरेली, शाहजहांपुर व पीलीभीत जनपद) में संचालित सरकारी प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों को सम्मिलित किया गया।

न्यादर्शन व न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के चयन हेतु उत्तर प्रदेश राज्य के बरेली मण्डल (बदायूं, बरेली, शाहजहांपुर व पीलीभीत जनपद) में से दो जनपद बरेली व पीलीभीत के पाँच विकास खण्ड व दो नगर क्षेत्र के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के 200 अभिभावकों का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन की लॉटरी प्रविधि के द्वारा किया गया।

तालिका–1

न्यादर्श का विवरण

क्रं. सं.	चर	चर का स्तर	संख्या	योग
1	लिंग	पुरूष	111	200
		महिला	89	

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

2	आवासीय पृष्ठभूमि	शहरी	66	200
		ग्रामीण	134	

उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी के द्वारा सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण मापन हेतु अपने शोध पर्यवेक्षक के निर्देशन में एक दृष्टिकोण मापनी का निर्माण किया गया। यह मापनी लिकर्ट के पाँच बिन्दु मापनी (पूर्णतः सहमत, सहमत कह नहीं सकते, असहमत व पूर्णतः असहमत) पर आधारित है। प्रस्तुत दृष्टिकोण मापनी में कुल 20 कथनों को सम्मिलित किया गया।

तालिका–2

दृष्टिकोण मापनी में धनात्मक एवं नकारात्मक कथनों का विवरण

क्र. सं.	कथनों की प्रकृति	कथनों की संख्या	मापनी में कथनों की क्रम संख्या
1	धनात्मक	16	1, 2, 3, 4, 5, 6, 8, 10, 11, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19
2	नकारात्मक	4	7,9,12,20

फलांकन प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने इस मापनी पर अभिभावकों द्वारा प्राप्ताकों का फलांकन, फलांकन कुंजी की सहायता से किया। अभिभावकों को सकारात्मक कथनों पर पूर्णतः सहमत, सहमत, कह नहीं सकते, असहमत व पूर्णतः असहमत पर क्रमशः 5, 4, 3, 2, 1 तथा नकारात्मक कथनों पर पूर्णतः सहमत, सहमत, कह नहीं सकते, असहमत, पूर्णतः असहमत पर क्रमशः 1, 2, 3, 4, 5 अंक प्रदान किये गये। इस प्रकार अभिभावकों दृष्टिकोण मापनी पर प्राप्तांकों का न्यूनतम एवं अधिकतम प्रसार 20 से 100 के मध्य था।

आंकडो के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत शोध में सभी आंकड़ों के विश्लेषण हेतु शोधार्थी द्वारा आवृति, प्रतिशत व टी–परीक्षण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया।

तालिका–3

ग्रेड प्रणाली

वर्ग	20–30	30–40	40–50	50–60	60–70	70–80	80–90	90–100
ग्रेड	अति सूक्ष्म	सूक्ष्म	अति निम्न	निम्न	औसत	उच्च	अति उच्च	अत्यधिक उच्च

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

तालिका–4

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति दृष्टिकोण मापनी पर अभिभावकों का दृष्टिकोण

वर्ग	पुरूष						महिला					
	शहरी		ग्रामीण		कुल पुरूष		शहरी		ग्रामीण		कुल महिला	
	F	⁄	f	⁄	f	⁄	f	⁄	f	⁄	f	⁄
20–30	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
30–40	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
40–50	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
50–60	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
60–70	2	6.90	4	4.88	6	5.41	2	5.41	3	5.77	5	5.62
70–80	18	62.07	49	59.75	67	60.36	27	72.97	35	67.31	62	69.66
80–90	9	31.03	29	35.37	38	34.23	8	21.62	14	26.92	22	24.72
90–100	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
i=10	**N=29**	**100⁄**	**N=82**	**100⁄**	**N=111**	**100⁄**	**N=37**	**100⁄**	**N=52**	**100⁄**	**N=89**	**100⁄**

तालिका 4 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि वर्ग 20–60 के मध्य शहरी पुरूष अभिभावकों, ग्रामीण पुरूष अभिभावकों व कुल पुरूष अभिभावकों की संख्या व उनके अंक प्राप्ति का प्रतिशत शून्य है। वर्ग 60–70 के मध्य शहरी पुरूष अभिभावकों, ग्रामीण पुरूष अभिभावकों व कुल पुरूष अभिभावकों की संख्या क्रमशः 2, 4 व 6 है जबकि उनका प्रतिशत क्रमशः 6.90, 4.88 व 5.41 है। वर्ग 70–80 के मध्य जिन शहरी पुरूष अभिभावकों, ग्रामीण पुरूष अभिभावकों व कुल पुरूष अभिभावकों ने जो अंक प्राप्त किये उनकी संख्या क्रमशः 18, 49 व 67 रही जबकि उनके अंक प्राप्ति का प्रतिशत क्रमशः 62.07, 59.75 व 60.36 रहा है। वर्ग 80–90 के मध्य शहरी पुरूष अभिभावकों, ग्रामीण पुरूष अभिभावकों एवं कुल पुरूष अभिभावकों की संख्या क्रमशः 9,29 एवं 38 है वहीं उनके उनके अंक प्राप्ति का प्रतिशत 31.01, 35.37 एवं 34.32 है। वर्ग 90–100 के मध्य अंक प्राप्त करने वाले शहरी पुरूष अभिभावकों, ग्रामीण पुरूष अभिभावकों तथा कुल पुरूष अभिभावकों की संख्या व उनका प्रतिशत शून्य है। उपरोक्त तालिका के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि दृष्टिकोण मापनी पर सभी शहरी पुरूष अभिभावकों, ग्रामीण पुरूष अभिभावकों एवं कुल पुरूष अभिभावकों ने औसत ग्रेड से अधिक लेकिन अत्यधिक उच्च ग्रेड से कम अंक प्राप्त किये हैं जिससे ज्ञात होता है कि शहरी पुरूष अभिभावकों, ग्रामीण पुरूष अभिभावकों एवं कुल पुरूष अभिभावकों के दृष्टिकोण में सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावाशीलता को सफल माना जा सकता है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

तालिका 4 के अवलोकन से यह भी प्रतीत होता है कि वर्ग 20–60 के मध्य शहरी महिला अभिभावकों, ग्रामीण महिला अभिभावकों व कुल महिला अभिभावकों की संख्या व उनका अंक प्रतिशत शून्य है। वर्ग 60–70 के मध्य शहरी महिला अभिभावकों, ग्रामीण महिला अभिभावकों एवं कुल महिला अभिभावकों की संख्या क्रमशः 2, 3 एवं 5 है जबकि उनका अंक प्रतिशत 5.41, 5.77 एवं 5.62 है। वर्ग 70–80 के मध्य जिन शहरी महिला अभिभावकों, ग्रामीण महिला अभिभावकों एवं कुल महिला अभिभावकों ने अंक प्राप्त किये है उनकी संख्या क्रमशः 27, 35 व 62 है उनका प्रतिशत 72.97, 67.31 व 69.66 रहा। वर्ग 80–90 के मध्य अंक प्राप्त करने वाले शहरी महिला अभिभावकों, ग्रामीण महिला अभिभावकों एवं कुल महिला अभिभावकों की संख्या क्रमशः 8, 14 एवं 22 रहीं जबकि उनका प्रतिशत 21.62, 26.92 एवं 24.72 रहा। वर्ग 90–100 के मध्य शहरी महिला अभिभावकों, ग्रामीण महिला अभिभावकों तथा कुल महिला अभिभावकों की संख्या तथा उनका अंक प्रतिशत शून्य है। उपरोक्त तालिका अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि दृष्टिकोण मापनी पर सभी शहरी महिला अभिभावकों, ग्रामीण महिला अभिभावकों व कुल महिला अभिभावकों ने भी औसत ग्रेड से अधिक व अत्यधिक उच्च ग्रेड से कम अंक प्राप्त किये हैं जिससे स्पष्ट होता है कि सभी पुरूष अभिभावकों की भाँति सभी महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण में भी सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता को सफल माना जा सकता है।

तालिका–5

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

न्यादर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	क्रान्तिक मूल्य	टी–मूल्य	टिप्पणी
पुरूष अभिभवाक	111	77.00	4.54	198	1.97	0.06	सार्थक नहीं
महिला अभिभावक	89	77.04	4.06				

सार्थकता स्तर 0.05

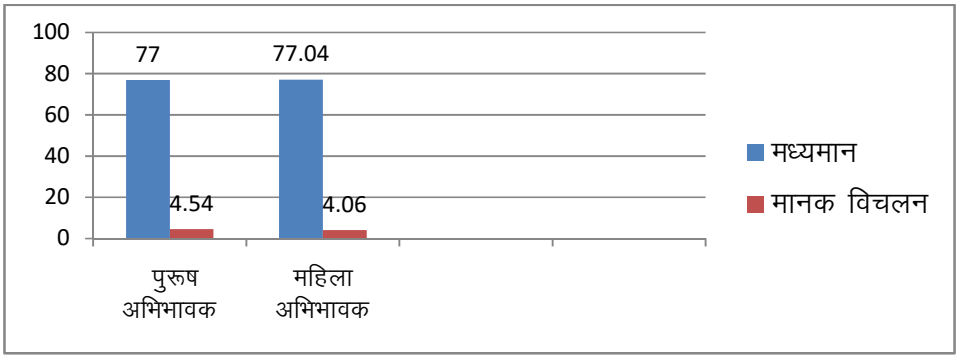

रेखाचित्र–1

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों का मध्यमान एवं मानक विचलन

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

तालिका 5 से ज्ञात होता है कि सर्व षिक्षा अभियान के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के मध्य t का परिगणित मान 0.06 है जो स्वतंत्रता अंश 198 पर तालिका मान 1.97 से कम है अतः इसे सार्थक नहीं कहा जा सकता है। इसीलिए शून्य परिकल्पना "सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" को स्वीकार किया जाता है अर्थात कहा जा सकता है कि सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। रेखाचित्र 1 से स्पष्ट होता है कि सर्व षिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूष अभिभावकों का मध्यमान 77.00 है जोकि महिला अभिभावकों के मध्यमान 77.04 से कम है। दोनों समूहों के मध्यमानों के इस अन्तर को सार्थक नहीं कहा जा सकता हैं। सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर न होने का कारण पुरूष अभिभावकों के समान महिला अभिभावकों में भी शिक्षा प्रचार–प्रसार में वृद्धि हुई है। जिसके परिणाम स्वरूप दोनों समूहका सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति समान दृष्टिकोण हो सकता है। पूर्व में किये शोध अध्ययनों में रेड्डी एवं रॉव (2019) ने भी स्वीकार किया कि सर्व शिक्षा अभियान के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–6

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन

न्यादर्श	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतत्र्यांश	क्रान्तिक मूल्य	टी–मूल्य	टिप्पणी
शहरी अभिभवाक	66	76.62	4.37	198	1.97	0.93	सार्थक नहीं
ग्रामीण अभिभावक	134	77.22	4.30				

सार्थकता स्तर 0.05

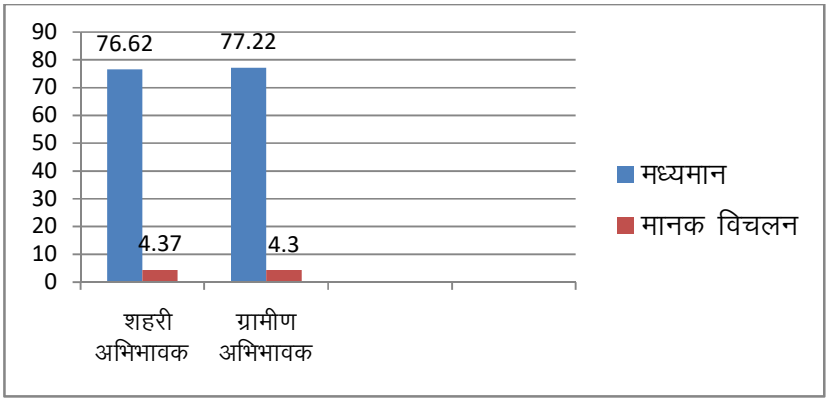

रेखाचित्र–2

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों का मध्यमान एवं मानक विचलन

तालिका 6 से ज्ञात होता है कि सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के मध्य **t** का परिगणित मान 0.93 है जो स्वतंत्रता अंश 198 पर तालिका मान 1.97 से कम है अतः इसे सार्थक नहीं कहा जा सकता है। इसीलिए शून्य परिकल्पना "सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है" को स्वीकार किया जाता है अर्थात कहा जा सकता है कि सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। रेखाचित्र 2 से स्पष्ट होता है कि सर्व शिक्षा अभियान के प्रति शहरी अभिभावकों का मध्यमान 76.62 है जोकि ग्रामीण अभिभावकों के मध्यमान 77.22 से कम है। मध्यमानों के इस अन्तर को सार्थक नहीं कहा जा सकता हैं। सर्व शिक्षा अभियान के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर न होने का कारण शहरी क्षेत्रों के अभिभावकों के शिक्षित होने के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों के अभिभावकों में भी शिक्षा के प्रचार–प्रसार में तीव्र गति से वृद्धि हुई है जिससे दोनों वर्गों का सर्व शिक्षा अभियान के प्रति एक साथ जागरूक होना हो सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत कार्य से प्राप्त निष्कर्ष अग्र प्रकार है–

1. सर्व षिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति पुरूष अभिभावकों एवं महिला अभिभावकों के दृष्टिकोण में अन्तर न होने का कारण सर्व शिक्षा अभियान के प्रति समान रूप से जागरूक है।
2. सर्व शिक्षा अभियान की प्रभावशीलता के प्रति शहरी अभिभावकों एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है क्योंकि शहर के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा का प्रचार–प्रसार समान रूप से हो रहा है।

शैक्षिक निहतार्थ

1. प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण हेतु सर्व शिक्षा अभियान एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। सर्व शिक्षा अभियान के सही से क्रियान्वयन पर ही उसे प्रभावी व अप्रभावी बनाया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों, छात्रों व अभिभावकों को सर्व शिक्षा अभियान के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण को समझने में सहायता प्रदान कर सकते हैं।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

3. प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर अभिभावकों को सर्व शिक्षा अभियान के प्रति और अधिक जागरूक कर उनकी प्रतिभागिता को बढ़ाया जा सकता है जो इस योजना के उद्देश्यों को प्राप्त करने सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

सन्दर्भ सूची

गुप्ता, एस. पी. (2017). अनुसंधान संदर्शिकाः सम्प्रत्य, कार्यविधि एवं प्रविधि. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन.

जैन, एस. एण्ड मित्तल, एम. (2011). एसेसमेन्ट ऑफ सर्व शिक्षा अभियान इन सर्वोदय स्कूल ऑफ देहली, इण्डियन एजूकेशनल रिव्यू, 49(2), 15–29.

कुमारी, एस. एण्ड गिल, एस. के. (2016). इफेक्टिवनेश ऑफ कमयनिटी पारटीसिपेशन इन सर्व शिक्षा अभियान, सूरजपुंज जर्नल ऑफ मल्टीडिसीप्लिनरी रिसर्च, 6(2), 198–207.

लाल, आर. बी. (2007). शिक्षा के दाशर्निक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठः रस्तोगी पब्लिकेशन.

मण्डल, पी., दास, एल., पांडा, एस. एण्ड पाल, पी. के. (2018). एटीट्यूड ऑफ गार्जियन टूवार्डस सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए) अमाँग एग्रो–ऑक्युपेशनल कम्युनिटीज ऑफ वेस्ट बेंगाल, इण्डिया, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इनक्लूजिव डेवलेपमेण्ट, 4(1), 15–20.

रॉव, वी. एस. (2009). लैक ऑफ कम्युनिटी पारटीसिपेशन इन सर्व शिक्षा अभियान : ए केश स्ट्डी, इकोनोमिक एण्ड पॉलिटीकल वीक्लेय, एक्सएलआईवी(8), 61–64.

रेड्डी, के. वी. एस. एण्ड रॉव, एन. वी. (2019). परसेप्शन ऑफ पैरेन्टस टूवार्डस राजीव विद्या मिशन (एसएसए) प्रोगरैम, इन्टरनेशनल जर्नल इन मैनेजमेन्ट एण्ड सोसियल साइन्स, 7(3), 75–82.

वर्मा, जी. एस. एण्ड कुमारी, एस. (2008). भारत मे शिक्षा प्रणाली का विकास, मेरठः लायल बुक डिपो.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language